लिली रे

मैथिली कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर लिली रेक जन्म रामनगर (पूर्णिया) मे 26 जनवरी 1933 ई. मे भेल छलनि। हिनक 'रंगीन परदा' मैथिली कथा साहित्यमे चर्चित अछि। मरीचिका (दू खण्ड), पटाक्षेप, उपसंहार आदि हिनक प्रसिद्ध उपन्यास अछि। हिनक कथाक कथ्य ओ शैली अन्यसँ भिन्न अछि। हिनक प्रत्येक कथामे विचाराभिव्यक्ति स्पष्ट रहैत छनि। मरीचिका उपन्यास पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। हिनका प्रबोध साहित्य सम्मान सेहो भेटल छनि। ई दार्जिलिंगमे रहैत छथि।

चन्द्रमुखी कथामे मायक त्याग ओ ममताक एक कारुणिक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतमे संतानक लेल माय ममताक मञ्जूषा, वात्सल्यक वाटिका ओ स्नेहक सुख-सदन मानल गेल अछि। ओ अपन संतानक लेल कोनो त्याग करबाक लेल तैयार रहैत अछि।

सम्पूर्ण कथामे लेखिका अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ संतान-स्नेहक चित्र उपस्थित कयने छथि।

चन्द्रमुखी

अट्टा-पट्टा चन्द्रमुखी दाइकेँ पाँचटा बेटा।

मुदा चन्द्रमुखी दाइकेँ पाँच टा बेटा नहि भऽ सकलनि। प्रथम सन्तानक जन्मसँ तीन मास पूर्वहि देहान्त भऽ गेलनि। चन्द्रमुखी दाइ पछाड़ खा खसली। लोक सम्हारलकनि। बुझौलकनि -अहाँ कि मात्र अपना देहे छी ? क्यो आर अछि अहाँक संग, तकरा किएक बिसरै छी ? उठू, मोनेकेँ काबूमे आनू।

चन्द्रमुखी दाइ उठि बैसली । ताही क्षण बुझि पड़लनि जे पेटमे क्यो कुदकि रहल होनि। पीड़ारहित, गुदगुदवैत। चन्द्रमुखी दाइ ममत्वसँ भरि उठली । पेट पर हाथ हँसोथि, मोनहिमोन बजली -'खेलाउ'।

बेटाक पहिल क्रन्दन जखन चन्द्रमुखी दाइक कानमे पड़लनि जेना ओ क्रन्दन नहि भऽ सूचनाक हुकार छल -'हम आबि गेलहुँ।

चन्द्रमुखी दाइमे हठात् दुनियाँक बल आबि गेलनि। पड़लि रहलासँ काज नहि चलतनि। नान्हिटा कोंढ़ी टुकरामे लटपटायल पड़ल छल ककरा भरोस पर? चन्द्रमुखी दाइकेँ ओकरा विकसित करबाक छलनि। जेहेन परिचर्या, तेहेन सुन्दर फल।

''फूल। हमर फूल। हमर रक्तसँ सीचल, हमर दूधमे बोरल।''

क्यो कहलकनि -''हे बदामक दालि जुनि खाउ। बच्चाकेँ वायु करतैक।''

चन्द्रमुखी दाइ बदामक दालि खायब छोड़ि देलनि।

''हे बच्चा गोंगियाइत अछि। प्राय: दाँत उठैत छैक।''

''कनिक कऽ दालिक पानि चटा देल करियौ। दाँत बहरयबामे सुभीता हेतैक। बिन छौंकल दालि।''

चन्द्रमुखी दाइ नित्य छौंकबाक पहिनहि बेटाकेँ दालिक पानि चटायब नहि बिसरथि। बोलारय देथिन -''हमर एतनीटा फूल, फूल औ फूल । लियऽ चाटू। दाँत बहरायत तखन ने दालि चीखब।''

फूल जोरसँ किलकारी देथि। चन्द्रमुखी नेहाल भऽ जाथि।

''भौजी। किताबमे लिखल छैक जे नित्य माछ खयबाक चाही। माछ खयलासँ बुद्धि बढ़ैत छैक।

चन्द्रमुखी दाइ माङिकऽ-चाङिकऽ जेना होनि तेना एकटा पोठी सुतारिये लेथि अपन फल लेल।

''छोट जन, हम अहाँक कमीज पैंट नित्य साबुनसँ खीचि देल करब, लोहा सेहो कऽ देब। अहाँ हमर बच्चाकेँ दू अच्छर पढ़ा देब ?''-चन्द्रमुखी गामक सम्पर्कक एक किशोर देयौरसँ कड़ार करौलनि।

टोल, पड़ोस, दुरस्थ सम्बन्धिक वर्ग, सब दिस ताक लगौने रहथि चन्द्रमुखी । जखन जकरा कतऽ कोनो कार्य-प्रयोजनक भीड़ होइ जा कऽ खटि आबथि। जे पारिश्रमिक भेटनि ताहिसँ फूल लेल माछ-भातक जोगार करथि।

''हे, बेटा अहाँक तेज अछि। एकरा आगू पढ़बियहु।''

चन्द्रमुखी दाइ राति भरि जागि चरखा काटऽ लगली।

कम-सँ-कम बीस रुपया मास तऽ चाहबे करी।

स्वराजी हवामे चन्द्रमुखी दाइक मोन धुक-धुक करनि। प्रति बेर फूलकेँ कहथिन -''बच्चा, अहाँ ओहि सबसँ एकदम फराक रहब। अपन विधवा मायकेँ मोन पाड़ब। हमरा आर क्यो नहि अछि।''

फूल आश्वासन देथिन। चन्द्रमुखी दाइ कृतकृत्य भऽ जाथि। भड़ारमे जे किछु रहनि, आनि कऽ दऽ देथिन।

''बच्चा ई कनिये घी रखने छी, अहाँ लेल। माछ खाइ छी किने सब दिन ?''

''हँ, आ तोँ ? किछु खाइ-पिबै छँ कि सभटा हमरे दऽ दैत छँ ?''

''दुर, बिन खयने क्यो रहैत अछि ?''

मुदा चन्द्रमुखी रहैत छली। आइ एकादशी, काल्हि चतुर्दशी, परसू निराहार। आ पारण लै तुलसीक पात भेलनि पर्याप्त। विधवाकेँ एतबे बहुत। अनेरे फाजिल खर्च।

अदौरी जकाँ खोंटि-खोंटि कऽ खर्च करथि चन्द्रमुखी दाइ। एखन बहुत खर्च बाँकी छलनि। बेटाकेँ ओकील बनयबाक छलनि।

ओकालति पास करैत देरी बेटा खर्च लेब बन्द कऽ देलकनि। किछु दिन बाद प्रति मास पाँच टाका पठबऽ लगलनि। आरो किछु दिन बाद दस टाका।

मुदा चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च नहि बढ़ौलनि। ओ दू कट्ठा जमीन किनलनि। आमक बाड़ी बनौती। कम-सँ-कम एकटा पक्का घर बनबऽ चाहैत छलीह। अतिचारक बाद बेटाक विवाह करौती। पुतहु माटिक घरमे पयर रोपतनि ? नहि, बेटा-पुतहुक कोठली पक्काक रहतनि। अपने रहती कच्चामे । फूल कतबो आपत्ति करथू।

फूलक वश चलनि तँ एखने चन्द्रमुखीकेँ मधुबनी लऽ जाथि। मुदा चन्द्रमुखी राजी नहि भेलि। बजली - "गाम घर बिलटि जायत ?

"कोन एहेन खजाना छैक जे बिलटि जायत।"

"जतबे अछि। जखन दू गोटे भऽ जायब तखन पार बान्हि कऽ एक गोटे गाम तऽ एक गोटे मधुबनी।"

एक छन लेल फूल लजा गेला। बजला- "जेहन विचार होउ, ओतऽ हमरा हरदम मोन पड़ैत छैँ।

"हम मोन पड़ै छी ?"

"तऽ आर के मोन पड़त ? के अछि हमर अपन ? जहियासँ ज्ञान भेल, तोरा खटितहि देखलियहु। दिनकेँ दिन नहि रातिकेँ राति नहि बुझि खटैत। एकटा भनसिया किएक ने राखि लैत छैँ ? मात्र दू टाका मास तऽ लगतौ। ककरा लेल एतेक बचबैत छैँ ?"

"नहि, से नहि। एकटा पेट लेल कतबा काज ? आ सेहो नहि रहत तँ समय कोना कटत ?''

"तँ तऽ कहैत छियौ चल हमरा संग। ओतऽ सिनेमा देखबैँ। कीर्तन सुनबैँ । सुन, दरभंगा चलबैँ ?"

- "आब सब किछु अतिचारक प्रात।"

- "जेहेन विचार" - फूल फेर लजा गेला ।

फूलक गेलाक बाद कतेक दिन धरि हुनकर गपशप कानमे घुसिआइत रहनि। चन्द्रमुखी गदगद भऽ भाषथि -"ककरा छैक हमरासन बेटा ? लाखमे एक अछि। कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब। दू-चारि दिन पाहुन -पड़क जेकाँ रहब। बेटा-पुतहुकेँ स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभ नव वयस। इएह तऽ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक।

ओहिमे बूढ़ लोकक मुड़ियारी देब महा अनुचित। हम एतऽ अपन गाछी देखब। पोता-पोती आम खाइ लेल आओत। एकटा महीस कीनि लेब। जेना सिंहबाड़सँ महन्त मिसर के अठमा दिन पर भार अबैत छलनि - दही, माछ, मधुर, केरा। धन्न सासुर नहि तऽ की छलनि महन्त मिसरकेँ? आब तँ सुनै छियै एतहु सड़क बनतैक। पाँच वर्षमे कहाँ दन रिक्सा चलऽ लगतैक। तखन यदि चाहब तऽ सब दिन माछ, दूध, दही, तरकारी एतऽ सँ पठा सकबनि। यदि अपन घरसँ बहरयतनि तऽ पाइ खर्च कऽ किएक किनता फूल ?"

चन्द्रमुखी रुपैया जमा करऽ लगली। अपना ऊपर जेहो खर्च रहनि , तकरो घटा लेलनि। कतेक दिन चूड़ा भिजा, नोन -अचारक संग खा लेथि।

जाहि दिन फूल गाम आबथि, चन्द्रमुखी खूब मोन लगा कऽ भानस करथि। विधवा छली, तैयो अपनहिसँ माछ रान्हथि। तोड़ी - आमिलक झोर दऽ कऽ। फूलकेँ बड़ पसिन्न छलनि।

माछक झोरमे भात सानि कऽ हाथ बारि लेलनि फूल।

"की भेल ?"

"दर्द। पेटमे।"

"ओहू बेर दर्द दऽ कहने रही। जमाइनक अर्क लेबो कयलहुँ ?"

"लेलहुँ तऽ, मुदा किछु भेल नहि।"

"थम्हू, हम नेबोक खदकी बना कऽ दैत छी ।"

चन्द्रमुखी हबर-हबर नेबोक खदकी बना कऽ देलथिन। फूलकेँ किछु आराम बूझि पड़लानि। ओ हाथ धो घरमे पड़ि रहला। चन्द्रमुखी पंखा हौंकऽ लगली। फूलकेँ नीन भऽ गेलनि। चन्द्रमुखी लक्ष कयलनि फूल दुबरा गेल छला। आँखिक तऽरमे स्याह पड़ि गेल छलनि। बड़ खटनी पड़ैत छनि। एतेक खटबाक कोन प्रयोजन ? थोड़बहि कमाउथ, खाउथ, मौज उड़ावथु।

चन्द्रमुखीकेँ नहि चाहियानि पाइ। जकरा फूल सन बेटा रहतैक, तकरा कथीक अभाव ?

"बच्चा अहाँ हमरा अधे पठाउ।" - विदा हेबाक बेर चन्द्रमुखी बजली।

"किएक ?"

"खर्चे नहि अछि तऽ बेशी किएक लिअउ ?"

"खर्चा तऽ हमरो नहि अछि।"

"नहि बच्चा। अहाँकेँ हमरे सप्पत थिक। खयबा-पिउबामे कोताही जुनि करू।"

"तोरा के कहलकौ जे हम खयबामे कोताही करैत छी ?"

"क्यो कहलक नहि मुदा ...."

"पेट जे दुखायल ?"

चन्द्रमुखी मूड़ी डोला स्वीकार कयलनि।

"से तऽ आइ दू माससँ भऽ रहल अछि। खाइ छी तैयो, नहि खाइ छी तैयो ''

"दू मास ? बच्चा, अहाँ एक बेर दरभंगा जा कऽ शीतल बाबूसँ देखा आउ। जे पाइ लागत हम देब।"

फूलकेँ हँसी लागि गेलनि। बजला – "बड़ पाइ छौक तोरा ?"

"हँसी नहि, सत्ते कहै छी । अहाँ छोड़ि हमरा अछिये की ?"

"आब तों कानऽ जुनि लाग। देखा लेब। मुदा डाक्टर जे कहत से जनले अछि। .... बुढ़ियाक फूसि।"

चन्द्रमुखीकेँ सेहो हँसी लागि गेलनि। छहछह आँखिये हँसैत बजली – "भगवती करथु सैह बहराय।"

मुदा भगवती नहि कयलखिन। फूलक लघीमे रक्त बहराय लगलनि। डाक्टरक संदेह छलैक –कैंसर।

चन्द्रमुखी एहि डाक्टरसँ ओहि डाक्टर लग दौड़ऽ लगली। आमक बाड़ी सूद भरना पर दऽ पटना गेली। फेर जाँच। चन्द्रमुखीकेँ विश्वास छलनि जे डाक्टर कहत –पहिला बेरक जाँचमे गलती भऽ गेल रहैक। नीकेँ भऽ जयता। आपरेशनक आवश्यकता नहि।

मुदा डाक्टर से कहियो नहि कहलकनि। आपरेशनक बात कहलकनि –"ई हमरालोकनिक साध्यसँ बाहर अछि। अधिकसँ अधिक तीन मास खेपि जयता। एकमात्र भगवानक भरोस।"

ईश्वर सर्वशक्तिमान छथि । चन्द्रमुखी दाइकेँ मोन पड़लनि –जाहि समय विधवा भेल छली, घरक गोसाउनि लग कल जोड़ि प्रार्थना कयने छली – हमर जीवन निदग्ग राखब।

पहाड़ सन जीवन काटि गेली चन्द्रमुखी अछि जल जका। क्यो आङ्गुर तक नहि उठा सकल।

सब सराहि रहल छनि कोना? खाली भगवतीक कृपा। नहि तऽ ओ कोन जोगरक छली?

चन्द्रमुखी फूलकेँ गाम लऽ अनलथिन। कविराजी चिकित्सा करबऽ लगली। गोसाउनिक घरमे सम्पुट पाठ। फूलक सिरमा लग बैसि अपनहु 'रोगान शेषान्' केर जप करैत रहथि।

चन्द्रमुखी जप करैत छली, जखन फूलक प्राण छुटलनि। चन्द्रमुखी हतबुद्धि भेल देखऽ लगली। अपलक।

लोक सब अन्त्येष्टिक ओरिआनमे लागि गेल। क्यो आबि कऽ पुछलकनि-''घरमे नव धोती अछि ?''

चन्द्रमुखी आँचरसँ चाभी खोलि कऽ दऽ देलथिन। चुपहि मुहेँ। तिलांजलि देबऽ गेली। चुपहि मुहेँ। लोक सब सेहो स्तब्ध अदृष्टक क्रूर परिहास पर।

सहसा ककरो ध्यान पर चढ़लैक जे चन्द्रमुखी एकदम गुम्म भऽ गेल छली।

"तखनसँ एकहु आखर मुँहसँ नहि बहरायल छनि।"

"पल सेहो नहि खसलनि अछि।"

"कहुना हुनका कनयबाक चाही ।"

"एह, कनैत-कनैत नोर सुखा गेलनि बेचारीक।"

"मुदा एना गुम्म भऽ जायब नीक लक्षण नहि थिक।"

"की कहियनु, किछु फुरितहि ने अछि।"

"कोनो-ने-कोनो उपायसँ .....।"

"कोनो बच्चाकेँ सिखा दियौ ?"

सब चन्द्रमुखीकेँ सोर पाड़ऽ लगलनि-

"बाबी!"

"काकी।"

"भौजी।"

"बौआसिन।"

सब चन्द्रमुखीकेँ बजयबा पर तुलि गेल। देह झकझोरि कऽ सोर पाड़ऽ लगलनि।

"एना चुप किएक छी ?"

"होशमे आउ ।"

"भगवतीकेँ इएह मंजूर छलनि।"

"हे, गीताक श्लोक सुनू .....।"

"भगवद्भजनमे लागि जाउ।"

"की ? बजैत किएक नहि छी ?

"किछु तऽ बाजू।"

"बाजू।"

"बाजू ने !"

सब आरो जोरसँ झकझोरऽ लगलनि चन्द्रमुखीकेँ।

चन्द्रमुखी बजली - "हमरा भूख लागल अछि। घरमे जे भेटय, आनि दियऽ। हम खाऽ कऽ सूति रहब। आब कथी लेल उपास आ ककरा लेल जगरना।"

शब्दार्थ

हठात् - एकाएक

बिलटि - नष्ट भऽ जाय

अछिंजल - पूजा हेतु पवित्र जल

निदग्ग - दाग रहित

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नक सही विकल्प चयन करू :

(i) चन्द्रमुखी दाइक पुत्र अछि -

(क) रामू (ख) देबू

(ग) फूल (घ) गुलाब

(ii) माछ खयलासँ बढ़ैत अछि -

(क) बुद्धि (ख) लम्बाइ

(ग) सुन्दरता (घ) संस्कार

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) फूल ओकालति पास कयलाक बाद मायकेँ प्रतिमास ..... टाका पठबऽ लगलनि।

(ii) फूल चन्द्रमुखीकेँ ..... शहर लऽ जाय चाहैत।

3. निम्नलिखित वाक्यकेँ आगू शुद्ध-अशुद्ध लिखू-

(i) चन्द्रमुखी दाइ दू कट्ठा जमीन किनलनि।

(ii) चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च बढ़ा लेलनि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) चन्द्रमुखी कथाक रचयिता के छथि ?

(ii) मरीचिका पर कोन पुरस्कार लेखिकाकेँ भेटलनि।

(iii) चन्द्रमुखीक बालकक नाम की छल ?

(iv) फूलकेँ कोन बीमारी भेलैक ?

(v) फूल केहन पुत्र छल ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) चन्द्रमुखी कथाक सारांश लिखू।

(ii) चन्द्रमुखी कथाक मूल विचार लिखू ।

(iii) अपन संतान लेल चन्द्रमुखी कोन-कोन कष्ट उठबैत रहलीह।

(iv) चन्द्रमुखी कथाक अहाँकेँ केहन लगैत अछि ?

(v) चन्द्रमुखीक चरित्र-चित्रण करू।

6. निम्नलिखित गद्य खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू -

" ककरा छैक हमरा सन बेटा ? लाखमे एक अछि।
कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब।
दू-चारि दिन पाहुन -पड़क जेकाँ रहब। बेटा पुतोहुकेँ
स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभक नव वयस।
इएह तँ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक। ओहिमे

बूढ़ लोकक मुड़ियारी देव महा अनर्थ।''

7. निम्नलिखित शब्दमे प्रत्यय -उपसर्ग फराक करू -

निराहार, संतान, ममत्व, अतिचार, व्याकरण, महानता, बुढ़ापा

गतिविधि-

(i) छात्र माय-बेटाक चित्र बनाय एक दोसरक स्नेहकेँ देखाबथि।

(ii) बालकक जीवन निर्माणमे मायक भूमिकाक उल्लेख करू।

(iii) शहरी ओ ग्रामीण माताक गति-विधिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करू।

निर्देश -

(i) शिक्षक छात्र लोकनिक बीच एक आदर्श भारतीय मायक चित्रण करथि।

(ii) माय-बेटाक पवित्र सम्बन्ध पर छात्र लोकनिक विचारक संकलन करू।

(iii) शिक्षक छात्रलोकनिसँ किछु एहन गीत गबाबथि जाहिमे मायक त्यागक वर्णन हो।